RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

नवम वर्ष, पंचम अंक

नवम्बर-दिसम्बर 2020

Bharatiya Jyotisham
भारतीय ज्योतिषम्

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

₹ 30

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	भारतीय ज्योतिष एवं कृषिमुहूर्त	प्रो.नीरज शर्मा	02
2.	ज्योतिष द्वारा रोग ज्ञान	डॉ. अनिल कुमार	07
3.	देवतामूर्तियों के आयुध एवं उपकरणादि	डॉ.आशीष कुमार चौधरी	09
4.	अश्वघोष के महाकाव्यों में जरा, व्याधि और मृत्यु : वैश्विक महामारी कोरोना के सन्दर्भ में	डॉ. गटुलाल पाटीदार	13
5.	वेदान्त दर्शन को सर्वज्ञात्ममुनि का योगदान	डॉ. ममता स्नेही	17
6.	संस्कृत प्रहसन-स्वरूप एवं विकास	डॉ. स्मिता शर्मा	23
7.	पुरुषार्थ-चतुष्टय के सन्दर्भ में 'काम'	डॉ. विशाल भारद्वाज	26
8.	त्रिविधा शास्त्रप्रवृत्ति : न्यायदर्शन अधिगम की अध्ययन पद्धति	डॉ. विकास सिंह	29
9.	वैश्विक परिदृश्य में योग की प्रासंगिकता	डॉ. संजय कुमार	33
10.	नैषधीयचरितम् महाकाव्य में निहित आयुर्वेदिक तत्वों का चिन्तन	डॉ. सुमन कुमारी	37
11.	औपनिषदिक प्रणव (ओंकार) ध्वनि का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण आधुनिक सन्दर्भ में	Dr. Sapna Yadav	43
12.	महिलाओं के हार्मोन संतुलन में योग की भूमिका	श्रीमती सुधा राजावत,डॉ साधना दौनेरिया	46
13.	कणादरहस्यम् पाण्डुलिपि : सम्पादनदृशा विवेचना	डॉ. वालखडे भूपेन्द्र अरूण	49
14.	वैदिक वाङ्मय में शरीर की अवधारणा	डॉ. मेघराज मीणा	55
15.	सुभाषितसर्वस्वम् में यात्राविचार	मुरलीधर पालीवाल	59
16.	सरस्वतीकण्ठाभरणस्थ कर्तृकारकविमर्श	Mr. Ankush Kumar	64
17.	वाल्मीकि रामायण में वर्णित अश्वमेध यज्ञ एवं अश्वमेध सम्बन्धी कतिपय आक्षेप	दीपक बन्देवार	69
18.	शिवलीलार्णव महाकाव्य में महिला सशक्तीकरण : एक विवेचन	हर्षा	75
19.	वाक् का स्वरूप : व्यावहारिक एवं पारलौकिक पक्ष	शिप्रा सिंह	79
20.	शिवशम्भु के चिट्ठे : प्रजा के प्रति शासक की जवाबदेही की माँग,	अमित कु. पाण्डेय, डॉ संजय कुमार	85
21.	'षोडश-संस्कारम्-नाटकम्' : एक समीक्षात्मक अध्ययन,	अनुपम गर्ग शुक्ल,आ. धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव	88
22.	वीरतरंगणी काव्य : एक परिचय	गौरव मन्हास	96
23.	मधुप जी के काव्य में अलंकार विवेचन	किरण मिश्रा	100
24.	'दुर्गसंगमनी' टीका के रचयिता श्रीजीवगोस्वामी जी का परिचय	मेघा पौराणिक	102

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
पूर्वप्राचार्य - केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
अध्यक्ष - तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
निदेशक - केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
क.जे.सौमेया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष - साहित्यविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

डॉ. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत वि.वि., नई दिल्ली

ISSN 2278 - 0327

सुभाषितसर्वस्वम् में यात्राविचार

मुरलीधर पालीवाल
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सुभाषितसङ्कलन परम्परा संस्कृतसाहित्य की एक उत्कृष्ट परम्परा है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न ऋषियों, कवियों, मनीषियों के नीतियुक्त मधुर पद्यों का संग्रह प्राप्त होता है। इस परम्परा का प्राचीनतम (1100ई.) उपलब्ध ग्रन्थ सुभाषितरत्नकोष/ कवीन्द्र-वचनसमुच्चय है। इसके सङ्कलनकर्ता विद्याधरपण्डित है।[1] इस परम्परा का प्रेरणा मंत्र महाभारत में इस प्रकार मिलता है-

सुव्याहृतानि सूक्तानि सुकृतानि ततस्तत:।
सञ्चिन्वन् धीर आसीत् शिलाहारी शिलं यथा।।[2]

इसी परम्परा में सत्रहवीं शताब्दी का एक महनीय ग्रन्थ प्राप्त होता है- सुभाषितसर्वस्वम्। इसके रचयिता श्रीगोपीनाथ है, यह एक अप्रकाशित पाण्डुलिपि ग्रन्थ है, जो तीन पद्धतियों में विभक्त है- (1) धर्म पद्धति, (2) अर्थ पद्धति एवं (3) काम पद्धति। इसमें विभिन्न प्रकरणों में विभक्त 825 से भी अधिक पद्य संगृहीत हैं। ग्रन्थकार ने ग्रन्थप्रयोजन इस प्रकार बताया है-

उधृत्य सर्वसारं ग्रन्थानालोक्य सर्वश: सुमति:।
कोऽपि सुभाषितमेतत्पण्डितमुखमण्डनं कुरुते।।[3]

ग्रन्थप्रयोजन की पूर्ति हेतु ग्रन्थकार ने कई विषयों पर सारभूत पद्य सङ्कलित किए हैं। उनकी यह नीति समुचित भी है-

अनन्तशास्त्रं बहुलाश्च विद्या स्वल्पश्च कालो बहुविघ्नता च।
यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।।[4]

इन्हीं विविध विषयों के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने अर्थपद्धति के 'अथ ज्योतिषम्' एवं 'अथ शकुनम्' प्रकरणों में यात्राविचारसम्बन्धी 15 पद्य सङ्कलित किए हैं। अधिकांश पद्यों का आकरग्रन्थ दैवज्ञश्रीपतिविरचित ज्योतिषरत्नमाला है।

ज्योतिष वह विज्ञान है, जिसके द्वारा आगामी शुभाशुभ घटनाओं का संकेत प्राप्त होता है। वेदांग शास्त्रों में भी ज्योतिष की प्रधानता मानी गई है-

वेदचक्षु: किलेदं स्मृतं ज्योतिषं मुख्यता चाङ्गमध्येऽस्य तेनोच्यते।
संयुतोऽपीतरै: कर्णनासादिभिश्चक्षुषाङ्गेन हीनो न किञ्चित्कर:।।[5]

शकुनशास्त्र के द्वारा भी भविष्यकालिक शुभाशुभफलों का ज्ञान प्राप्त होता है- '*शक्नोति शुभाशुभं विज्ञातुमनेनेति।*'[6] इस प्रकार यात्रारम्भ से पूर्व ज्योतिष एवं शकुनविषयक ज्ञान का विशेष महत्त्व है। इसी प्रयोजनपूर्ति के क्रम में सुभाषितसर्वस्वम् के 'अथ ज्योतिषम्' प्रकरण में छह पद्य सङ्कलित किए गए हैं। किस काल में किस दिशा में जाना चाहिए, इस हेतु यह पद्य संकलित है-

पूर्वाह्णे चोत्तरां गच्छेन्मध्याह्ने पूर्वतो व्रजेत्।
अपराह्णे दिशि याम्यां मध्यरात्रे तु पश्चिमाम्।।[7]

तदनुसार पूर्वाह्ण के समय उत्तर दिशा में, मध्याह्न के समय पूर्व दिशा में, अपराह्ण के समय दक्षिण दिशा में एवं अर्धरात्रि के समय पश्चिम दिशा में प्रस्थान करना चाहिए। यही बात भिन्न शब्दों में वशिष्ठमुनि ने इस प्रकार कही है-

पूर्वाह्णेऽप्युत्तरां गच्छेत्प्राचीं मध्यन्दिने तथा।
दक्षिणां चापराह्णे तु पश्चिमामर्द्धरात्रके।।[8]

यही बात निषेधक्रम से मुहूर्त्तचिन्तामणि ग्रन्थ में इस प्रकार कही गई है-

उष:कालो विना पूर्वां गोधूलि: पश्चिमां विना ।
विनोत्तरां निशीथ: सन् याने याम्यां विनाऽभिजित्।।[9]

यात्रा युद्धादि में विजय अथवा द्रव्योपार्जन, तीर्थदर्शन, कुटुम्बसम्मेलनादि विविध प्रयोजनों से की जाती है। इस हेतु मुहूर्त्तविचार आवश्यक माना गया है, जिसके अभाव में यात्रा निष्फल हो सकती है-

यात्राभिधानं कथयामि सोऽहं सर्वैरुपेतस्य गुणैर्जिगीषो:।
अतर्किते जन्मनि तस्य याने फलासिरुक्ता घुणवर्णतुल्या।।[10]

दिनमान एवं रात्रिमान के क्रमश: पन्द्रहवें-पन्द्रहवें भाग दिन एवं रात्रि के एक-एक मुहूर्त्त कहलाते हैं। दिन के 15 एवं रात्रि के 15 मुहूर्त्त मिलाकर 30 मुहूर्त्त प्रतिदिन होते हैं-

दिनस्य य: पञ्चदशो विभागो रात्रेस्तथा तद्धि मुहूर्त्तमानम्।[11]

अथवा नारदमुनि के अनुसार-

अह्न:पञ्चदशो भागस्तथा रात्रिप्रमाणत:।
मुहूर्त्तमानं द्वावेव क्षणर्क्षाणि समेश्वरा:।।[12]

प्राचीन मुहूर्त्तशास्त्रवेत्ताओं ने सिद्धमुहूर्त्तों के अन्तर्गत अभिजित् एवं विजय मुहूर्त्तों की भी गणना की हैं, जो सर्वसिद्धिदायक होते हैं–

वैराजनामा विजयः सिताख्यः सावित्रमैत्रावभिजिद्बलश्च ।
सर्वार्थसिद्ध्यै गदिता मुहूर्त्ता मौहूर्तिकैरत्र पुराणविद्भिः।।[13]

लल्लाचार्य के आधार पर कार्यसाधक मुहूर्त्तों के नाम इस प्रकार हैं–

श्वेतो मैत्रो विराजश्च सावित्रश्चाभिजित्तथा।
बलश्च विजयश्चैव मुहूर्त्ताः कार्यसाधकाः।।[14]

कुतुपसंज्ञावाची दिनमान का आठवाँ अभिजित् मुहूर्त्त दक्षिण दिशा की यात्रा को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा, राज्याभिषेक, विवाहादि समस्त माङ्गलिक कार्यों हेतु शुभ होता है–

अष्टमो ह्यभिजिदाह्वयः क्षणो दक्षिणाभिमुखयानमन्तरा ।
कीर्तितः परिककुप्सु सूरिभिर्यायिनामभिमतार्थसिद्धिदः।।[15]

अथवा

अष्टमो योऽभिजित्संज्ञः स एव कुतुपः स्मृतः।
तस्मिन्काले शुभा यात्रा विना याम्यां बुधैः स्मृता।।
यात्रानृपाभिषेकावुद्वाहोऽन्यच्च माङ्गल्यम्।
सर्वे शुभदं ज्ञेयं कृतं मुहूर्त्तेऽभिजित्संज्ञे।।[16]

इस अभिजित् मुहूर्त्त के विषय में सुभाषितसर्वस्वम् में कहा गया है कि यह सूर्य की गगनमध्यस्थिति में होता है और भगवान कृष्ण के सुदर्शन चक्र के समान किसी कार्य के सभी दोषों एवं विघ्नों को दूर करने वाला होता है–

रवौ गगनमध्यस्थे मुहूर्त्तेऽभिजिदाह्वये।
छिनत्ति सकलान् दोषांश्चक्रमादाय माधवः।।[17]

उपर्युक्त पद्य जल्हणकृत सूक्तिमुक्तावली में भी उपलब्ध होता है।[18] इस पद्य के भाव को आचार्य चण्डेश्वर ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

अभिजिद्योगे प्राप्ते भगवति मध्यंदिने दिनाधिपतौ।
चक्रेण चक्रपाणिः सर्वान्दोषान्निषूदयति।।[19]

सर्वसिद्धिदायक विजयमुहूर्त्त कुछ संध्या की व्यतीत हो जाने पर एवं कुछ तारागणों के उदय हो जाने पर होता है–

किञ्चित् सन्ध्यामतिक्रम्य किञ्चिदुद्भिन्नतारकम्।
विजयो नाम योगोऽयं सर्वकामार्थसिद्धिदः।।[20]

यह मुहूर्त्त सूक्तिमुक्तावली में भी उपलब्ध होता है[21] और बृहद्दैवज्ञरञ्जनम् में इसे गर्गमुनिप्रोक्त बताया गया है।[22]

यात्रा हेतु मुहूर्त्तों की प्रशस्तता कही गई है लेकिन कई बार मुहूर्त्त की अनुपलब्धता में भी यात्रा आवश्यक होती है। अतः वैसी स्थिति में यह व्यवस्था दी जाती है कि राजा या क्षत्रिय शुभ योगों के आधार पर, ब्राह्मण शुभ नक्षत्रों के आधार पर एवं चोर-तस्कर आदि शुभ शकुन के आधार पर यात्रा हेतु प्रस्थान करें लेकिन शेष जन मुहूर्त्त के आधार पर ही यात्रा विचार करें–

महीभृतां योगवशात् फलोदयो द्विजन्मनामृक्षगुणैः प्रजायते।
सतस्करादौ शकुनप्रभावतो जनस्य शेषस्य मुहूर्त्तशक्तितः।।[23]

उपर्युक्त पद्य मूलतः ज्योतिषरत्नमाला से संकलित है।[24] यही बात मुहूर्त्तचिन्तामणि में इस प्रकार कही गई है–

योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगुणैरपि भूदेवानाम् ।
चौराणां शुभशकुनैरुक्ता भवति मुहूर्त्तादपि मनुजानाम्।।[25]

नारदमुनि ने भी यही मत प्रस्तुत किया है–

फलसिद्धिर्योगबलाद्राज्ञो विप्रस्य धिष्ण्यतः।
मुहुर्तशक्तितोऽन्येषां शकुनैस्तस्करस्य च।।[26]

शुभमुहूर्त्त की अनुपलब्धता में समरविजयाभिलाषी राजा के लिए योग की उपादेयता आचार्य वराहमिहिर इस प्रकार प्रकट करते है–

न तिथिर्न च नक्षत्रं न ग्रहो नैन्दवं बलम्।
योगमेव प्रशंसन्ति वशिष्ठात्रिपराशराः।।[27]

आचार्य श्रीपति भी योग की महत्ता इस प्रकार बतलाते है–

यथा हि योगादमृतायते विषं विषायते मध्वपि सर्पिषा समम्।
तथा विहाय स्वफलानि खेचराः फलं प्रयच्छन्ति हि योगसंभवम्।।[28]

इन्हीं योगों के प्रसंग में राजाओं के लिए दो जयद योग ज्योतिषरत्नमाला से सुभाषितसर्वस्वम् में संकलित किए गए हैं[29]–

(1) यदि राजा के युद्धप्रयाण के समय सूर्य लग्न भाव में, चंद्र सप्तम भाव में और बुध द्वितीय भाव में हो तो वह शत्रुओं को शीघ्र ही उसी तरह समाप्त कर देता है, जिस प्रकार सद्योजात कृष्ण ने पूतना को मारा था–

लग्नेऽर्के सप्तमे चन्द्रे वित्ते सौम्यैर्गतो नृपः।
सद्योरिपूतनां हन्ति पूतनामिव केशवः।।[30]

(2) साथ ही यदि गुरु लग्नभाव में, सूर्य षष्ठभाव में एवं चन्द्र अष्टमभाव में होने पर युद्ध हेतु गए हुए राजा के समक्ष शत्रुसेना उसी प्रकार स्थिर नहीं रहती है जिस प्रकार दुष्ट व्यक्ति के साथ की गई मित्रता–

गुरुर्लग्ने रविः षष्ठे रन्ध्रेनेन्दुश्च गच्छतः।
यस्य तस्यारिसेनाग्रे खलमैत्रीव न स्थिरा।।[31]

इस प्रकार सुभाषितसर्वस्वम् के ज्योतिषप्रकरण में यात्राविचारसम्बंधी मुहूर्त्तों एवं योगों के वर्णन के पश्चात् शकुनप्रकरण में यात्रारम्भकालिक शकुनों को 10 पद्यों में विवेचित

किया गया हैं, जिसमें से एक पद्य कालकवलित हो चुका है। सुरक्षित 9 पद्यों में से 6 पद्य दैवज्ञश्रीपतिविरचित ज्योतिषरत्नमाला से लिए गए हैं। पूर्व में वर्णित शकुन की परिभाषा के अनुसार शकुन आगामी शुभाशुभ फल की भविष्यवाणी करने में समर्थ होते हैं। यह शकुनसंकेतित शुभाशुभफलप्राप्ति कर्मसिद्धान्त पर आधारित है। मनुष्य को पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मों के अनुसार ही शुभाशुभ शकुन की प्राप्ति एवं फललब्धि होती है। इस तथ्य को निम्नलिखित पद्य समर्थित करते हैं-

अन्यजन्मान्तरकृतं कर्म पुंसां शुभाशुभम्।
यत्तस्य शकुनः पाकं निवेदयति गच्छताम्।।[32]
पूर्वजन्मकृतकर्मणः फलं पाकमेति नियमेन देहिनाम्।
तत्प्रकाशयति दैवचोदितः प्रस्थितस्य शकुनस्थितस्य च।।[33]
बहूनां व्रजतां पुंसां शकुनस्य फलं कथम्।
स्वयं प्रोक्तं यतस्तेषां प्राक्कर्माणि पृथक्पृथक्।।[34]

ज्योतिषग्रन्थों में मुहूर्त्त, तिथि, वार, नक्षत्र, करण, लग्न एवं ग्रहबल की अपेक्षा शकुन की श्रेष्ठता कही गई है, जिसके अनुसार मुहूर्त्तादि की प्रतिकूलता में भी शकुन की अनुकूलता के अनुसार यात्रा सम्भव है-

नक्षत्रवारैस्तिथिभिः समस्तैः कार्यं न किञ्चिच्छकुने विरुद्धे ।
दोषोऽपि तेषां शकुनेऽनुकूले सदैव सिद्ध्यन्ति समीहितार्थः।।[35]
तिथिधिष्ण्यं च वारश्च लग्नं ग्रहबलं तथा ।
पञ्चानामपि सर्वेषां शकुनो दण्डनायकः।।[36]
नक्षत्रस्य मुहूर्त्तस्य तिथेश्च करणस्य च ।
लग्नस्य ग्रहवीर्यस्य शकुनो दण्डनायकः।।[37]

पथिक को शुभशकुनों की उपलब्धि में यात्रा आरंभ करनी चाहिए। अपशकुनों की दृष्टिगोचरता होने पर परिहारोपाय के अभाव में यात्रा टाल देनी चाहिए-

तत्रापशकुने शीघ्रं कार्यं परिहरेद्बुधः।
शुभे तु शकुने नूनं स्वाभीष्टं च समारभेत्।।[38]
वरं श्वयेद्दुर्जनकृष्णसर्पौ वरं क्षिपेत्सिंहमुखे स्वमङ्गम् ।
वरं तरेद्वारिनिधिं भुजाभ्यां नोल्लङ्घयेद्दुःशकुनं कदाऽपि।।[39]

सुभाषितसर्वस्वम् के शकुनप्रकरण में शुभशकुन इस प्रकार बताए गए हैं- भेरी, मृदङ्ग, शंख, वीणा, मुरली इत्यादि वाद्य यन्त्रों की मधुर ध्वनि एवं मंगलगीतगान, पुत्रान्विता युवती, सवत्सा गौ, धूले हुए वस्त्रों को लिए हुए धोबी,[40] स्वर्ण पात्र भृङ्गार, दर्पण, श्वान, मांस, पगड़ीधारी पुरुष, दूध, खड्ग, भरा हुआ कलश, छत्र, वीणा, झण्डा, कमल, दधि, चम्पक वृक्ष, घी, गोरोचन, कन्या, शंख, श्वेत वृषभ, फूल, ब्राह्मण, रत्न,[41] चातक पक्षी, नेवला, बकरा एवं मयूर।[42] इनमें से कोई भी शकुन यात्रा प्रस्थान काल में यात्री को मिलने पर यात्रा सुखपूर्वक एवं सफल होती है।

इन्हीं शुभशकुनों का मिलता-जुलता वर्णन मुहूर्त्तचिन्तामणि एवं ज्योतिर्निबन्ध ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है-

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषम् ।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ।।
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं
शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ।
भारद्वाजनृयानवेदनिनदा माङ्गल्यगीताङ्कुशा
दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो घटः स्वानुगः।।[43]
दध्याज्यदूर्वाक्षतपूर्णकुम्भाः सिद्धान्नसिद्धार्थकचन्दनानि।
आदर्शशङ्खामिषमीनमद्यगोरोचना गोमयमुद्धृतं गौः।।
भारद्वाजः राजविप्रौ सुहृद्धेश्या सपुत्रा स्त्री कुमारिका।
अभिरूपो नरोऽस्त्री वा गजो वाजी वृषःसितः।।
रज्ज्वा धृताऽन्यवर्णा गौः सवत्सा च विशेषतः।
उद्धृतं गोमयं मीनो मृत्तिका चोद्धृता तथा।।
रजको धौतवस्त्रश्च वेश्या तौर्यत्रिकध्वनिः।
जयमङ्गलशब्दश्च शान्तिपाठः प्रदीपकः।।
दीपो वा प्रज्वलद्वह्निः पूर्णकुम्भो नृपासनम्।
मद्यं मांसं च रुचिरं भक्ष्याणि च फलानि च।।
इक्षवो मधु ताम्बूलं वस्त्रालङ्करणानि च।
रौप्यं ताम्रं मणिःस्वर्णं द्रव्यंदर्पणमक्षताः।।
वितानं चामरं छत्रं दूर्वा वर्धापनं ध्वजः।
दोला चारुरथो वृद्धःपुत्रपौत्रार्थयुक् शुचिः।।
चन्दनानि सुगन्धीनि तथा पुष्पाणि रोचना।
घृतं दधि पयः पेयं सिद्धमन्नं वचः शुभम्।।[44]

साथ ही यदि कोई जलार्थी किसी साथी के साथ रिक्त कलश को लेकर जाता हुआ एवं उसको पूर्ण भरकर आता हुआ दिखे तो पथिक अपनी यात्रा में कृतार्थ होता है।[45] इसी बात को प्रकट करने वाला एक अन्य पद्य ज्योतिर्निबन्ध ग्रन्थ में भी प्राप्त होता है-

जलार्थी रिक्तकुम्भस्तु पथिकेन सह व्रजेत्।
निवर्तते यथा पूर्णः कृतार्थः पथिकस्तथा।।[46]

टोडरानन्दविरचित आयुर्वेदसौख्यम् में यही तथ्य वैद्ययात्रा-प्रसङ्ग में किञ्चित् भिन्न एवं समुचित प्रकार से कहा गया है-

आदाय रिक्तकलशं जलार्थी यदि व्रजेत्कोऽपि सहाध्वगेन।

पूर्णं समादाय निवर्ततेऽन्यो भवत्कृतार्थो भिषजस्तथैव।।[47]

इस पद्य के अनुसार यदि कोई जलार्थी किसी साथी के साथ रिक्तकलश लेकर जाता हुआ दिखे एवं उसको पूर्ण भरकर कोई अन्य व्यक्ति आता हुआ दिखे तो वैद्य अपनी यात्रा में सफलता प्राप्त करता है।

अभीष्टफलदायी शुभशकुनों के अतिरिक्त अनिष्टफलदायी अपशकुनों का वर्णन भी सुभाषितसर्वस्वम् में किया गया है। यदि यात्रिक के यात्रारम्भ में कोई खुले बालों वाला पुरुष, नग्न, जलावन लकड़ी लिए कोई महिला या पुरुष, भूखा, कुब्ज, अन्धा, वन्ध्या स्त्री, धोबी,[48] गोह, सर्प, खरगोश, जाहक दिखे तो यात्रा में सिद्धि नहीं मिलती है[50] लेकिन गोह, जाहक, सूकर, सर्प और खरहा का उच्चारण या स्मरण शुभ होता है-

गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं
नो शब्दो न विलोकनं च कपिऋक्षाणामतो व्यत्ययः।[51]

यात्रोद्यत व्यक्ति को 'कहाँ जा रहे हो?', 'मत जाओ' इत्यादि वाक्य कहना भी अपशकुन है। साथ ही किसी शत्रुवधोद्यत व्यक्ति के 'पकड़ो', 'मारो', 'काटो', 'पीटो' इत्यादि शब्दों का सुनाई देना भी अपशकुन है और इससे अध्वग अपनी यात्रा के प्रयोजन में निष्फल होता है।

यातृक के प्रयाणसमय गृहक्लेश, गृहदाह, स्त्रियों का ऋतुस्राव, भैंसों एवं बिल्लियों का झगड़ना, छींक, वस्त्रों का खिसककर गिरना, दुर्वचन, क्रोध इत्यादि यात्रा प्रयोजन संहारक होते हैं।[52] उपर्युक्त अपशकुनों का मिलता-जुलता वर्णन मुहूर्त्तचिन्तामणि एवं ज्योतिर्निबन्ध ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है-

वन्ध्या चर्म तुषास्थि सर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीबविट्-
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राट्तृणव्याधिताः।
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिता व्यङ्गक्षुधार्ता असृक्
स्त्रीपुष्पं सरठः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ।।
काषायी गुडतक्रपङ्कविधवाकुब्जा कुटुम्बे कलि-
र्वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च ।
कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेऽतिरुट् गर्भिणी
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धबधिरोदक्यो न दृष्टाः शुभाः।।[53]
तृणतैलारिकार्पासभस्मचर्मतुषौषधम् ।
सामुद्रं गुडपङ्काहिमत्तं वान्तं बुभुक्षितम् ।।
क्लीबास्थिव्याधिताभ्यक्ततक्रमुण्डेन्धनान्तकाः।
काषायिमुक्तकेशाश्च याने दृष्टा न शोभनाः ।।
कुटम्बकलहो गेहज्वलनं स्त्री रजस्वला ।
संन्यासी गुर्विणी वन्ध्या धूमाङ्गारा न शोभनाः।।
कृष्णधान्यानि विष्ठा च जटिलः पतितः खलः।
व्यङ्गाः खञ्जाश्च नग्नाश्च याने दृष्टा न शोभनाः।।
युद्धं मार्जारयोर्नेष्टं याने महिषयोस्तथा।
क्षुतं सर्वत्र विघ्नाय मरणायैव गोक्षुतम्।।[53]

यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि नदी के पार उतरने, भय से भागने, गृहप्रवेश, लड़ाई तथा खोई हुई वस्तु के खोजने में उपर्युक्त अपशकुन शुभफलदायी होते हैं-

नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे
व्यत्यस्ताः शकुना नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शोभनाः।।[54]

अपशकुनों के वर्णन के पश्चात् सुभाषितसर्वस्वम् के शकुनप्रकरण में उनका परिहारोपाय भी बताया गया है। मूलतः वसन्तराजशाकुनम् से सङ्कलित पद्य के अनुसार अपशकुन हो जाने पर घर लौटकर हस्तपादप्रक्षालन एवं आचमन कर किसी क्षीरतरु (जिस की पत्तियों या डालियों को तोड़ने पर दूध निकलता हो, जैसे अर्क, वटवृक्ष आदि) के नीचे बैठकर किसी दूसरे शुभ शकुन की प्रतीक्षा करनी चाहिए तत्पश्चात् ही यात्रा करनी चाहिए।[56]

एक और समाधान यह भी बताया गया है कि विरुद्ध शकुन हो जाने पर ग्यारह श्वास तक ठहर कर या प्राणायाम कर यात्रा करें। फिर भी अपशकुन हो जाने पर सोलह श्वास तक ठहर कर या प्राणायाम कर यात्रा करें एवं इसके बाद भी अपशकुन हो जाने पर यात्रा टालकर घर आ जाना चाहिए।[57] यही बात किञ्चित् भिन्नता के साथ अन्य ग्रन्थों में भी कही गई है-

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत् ।
द्वितीये षोडश प्राणांस्तृतीये न क्वचिद्व्रजेत्।।[58]
विरुद्धे शकुने पूर्वे प्राणायामाष्टकं चरेत्।
द्वितीये द्विगुणान्कुर्यात्तृतीये न व्रजेत्क्वचित्।।[59]

ज्योतिर्निबन्ध ग्रन्थ में अपशकुननिवारण के और भी उपाय बताए गए हैं-

यदाऽपशकुनं पश्येद्विपरीतमुपस्थितम् ।
सघृतं काञ्चनं दत्त्वा निर्विशङ्कःसुखं व्रजेत् ।।[60]

नारदः-

आदौ विरुद्धशकुनं दृष्ट्वा यायीष्टदेवताम् ।
स्मृत्वा द्वितीये विप्राणां कृत्वा पूजां निवर्तयेत् ।।
वाराणस्यां दक्षिणे भागे कुक्कुटो नाम वै द्विजः।
तस्य स्मरणमात्रेणाशकुनः शकुनो भवेत् ।।
अविमुक्तचरणयुगुलं दक्षिणामूर्तेश्च कुक्कुटचतुष्टयम् ।
स्मरणादपि वाराणस्या निहन्ति दुःस्वप्नमथ शकुनं च ।।[61]

वृहद्यात्रायाम् -

अपि प्रहीणस्य समस्तलक्षण: क्रियाविहीनस्य निकृष्टजन्मन:।
प्रदक्षिणीकृत्य शशाङ्कशेखरं प्रयास्यत: कस्य न सिद्धिरिष्यते।।[62]

इस प्रकार सुभाषितसर्वस्वम् में यात्रासम्बन्धी आवश्यक दिशानिर्देशों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त होता है। सारभूतता एवं लोकोपयोगिता सुभाषितसर्वस्वम् ग्रन्थ का अपूर्व वैशिष्ट्य है और यही वैशिष्ट्य यात्राविचार के सम्बंध में इस ग्रन्थ के ज्योतिष एवं शकुन प्रकरणों में स्पष्ट हुआ है। आज के वैज्ञानिक युग में भी कर्मसिद्धांत पर आधारित ज्योतिष एवं शकुनशास्त्रविषयक यात्राविचार अत्यन्त उपयोगी है।

सन्दर्भसूची-

1. बलदेव उपाध्याय :संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001 ई., पृ. 314
2. महात्मा विदुर :विदुरनीति, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2014 ई., 2/33
3. गोपीनाथ :सुभाषितसर्वस्वम्, ग्रन्थांक 6346, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, 1/1/2
4. चाणक्यनीतिदर्पण, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2016 ई., 15/10
5. रामदीनदैवज्ञ :बृहद्दैवज्ञरञ्जनम्, 1/16
6. राधाकान्तदेव :शब्दकल्पद्रुम, शकुनम्
7. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/37/3
8. ामदैवज्ञ :मुहूर्त्तचिन्तामणि, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2002 ई., पृ.495
9. मुहूर्त्तचिन्तामणि, 11/54
10. श्रीपति :ज्योतिषरत्नमाला, श्रीरणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू, 1978 ई., 15/1
11. वही, 7/3
12. बृहद्दैवज्ञरञ्जनम्, 30/4
13. वही, 30/9
14. वही, 30/10
15. ज्योतिषरत्नमाला, 7/4
16. बृहद्दैवज्ञरञ्जनम्, 30/11-12
17. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/37/2
18. जल्हण :सूक्तिमुक्तावली,ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, बड़ोदा, 1938 ई., 109/99
19. बृहद्दैवज्ञरञ्जनम्, 30/13
20. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/37/1
21. सूक्तिमुक्तावली, 109/98
22. बृहद्दैवज्ञरञ्जनम्, 30/15
23. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/37/4
24. ज्योतिषरत्नमाला, 15/34
25. मुहूर्त्तचिन्तामणि, 11/57
26. रामदैवज्ञ : मुहूर्त्तचिन्तामणि, चौखम्भा अमरभारती प्रकाशन, 2013 ई., पृ.291
27. वही, 291
28. ज्योतिषरत्नमाला, 15/33
29. वही, 15/40,42
30. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/37/5
31. वही, 2/37/6
32. वराहमिहिर :बृहत्संहिता, वी. बी. सौब्बीह एण्ड सन्स, बेंगलुरु, 1946 ई., 86/5
33. शिवराज :ज्योतिर्निबन्ध, आनन्दाश्रम मुद्रणालय, पुणे, 1919 ई., यात्रायां शकुना:/6
34. वही, 16
35. टोडारानन्द :आयुर्वेदसौख्यम्, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 2003 ई., 5/36
36. ज्योतिर्निबन्ध, यात्रायां शकुना:/ 1
37. वही, 4
38. वही, 8
39. वही, 27
40. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/38/1
41. वही, 2/38/3
42. वही, 2/38/2
43. मुहूर्त्तचिन्तामणि, 11/100-101
44. ज्योतिर्निबन्ध, यात्रायां शकुना:, 28-35
45. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/38/7
46. ज्योतिर्निबन्ध, यात्रायां शकुना:, 45
47. आयुर्वेदसौख्यम्, 5/40
48. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/38/6
49. वही, 2/38/2
50. मुहूर्त्तचिन्तामणि, 11/104
51. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/38/8
52. वही, 2/38/5
53. मुहूर्त्तचिन्तामणि, 11/102-103
54. ज्योतिर्निबन्ध, अपशकुना:, 1-5
55. मुहूर्त्तचिन्तामणि, 11/104
56. सुभाषितसर्वस्वम्, 2/38/10
57. वही, 2/38/9
58. मुहूर्त्तचिन्तामणि, 11/108
59. ज्योतिर्निबन्ध, अपशकुनविधानम्, 5
60. वही, 3
61. वही, 6-8
62. वही, 9